

माँ की चिट्ठी

तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,
चिट्ठी में लिखा बेटा आज जो चाहिए तुझे आकर ले जा
अब तेरी बारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

वैष्णो धाम से आई चिट्ठी याहा आनंद समाया
जन्मो के मेरे पुण्ये पले जो माँ ने दर पे बुलाया
मेहँदी वाले हाथो से लिखी ममता सी शिंगाई है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

सुंदर भवन में शेर सजा के बैठी है महारानी,
जल्दी से तू आज बेटा केहती मात भवानी
मैंने भी माँ से मिलने की कर ली तयारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

मन मोहक ये पर्वत झरने गुण तेरा माँ गाये
बाण गंगा का बेहता पानी सब का मन हरषाए
काले काले छाए बादल बड़ी शोभा न्यारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

खुशी के मारे रेह न पाऊ सब को ये बतलाऊ
पड कर चिट्ठी माँ आंबे की पल भी चैन न पाऊ
माही को चिट्ठी आती रहे अभिलाज को चिट्ठी आती रहे फरयाद हमारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/20976/title/maa-ki-chithi>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |